ૐકાર ફાઉન્ડેશન ટ્રસ્ટ
'માનવસેવા એ જ ઈશ્વરસેવા'
ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट

वर्ष-6 अंक : 75

सहयोग शुल्क : रु. 1 / मार्च : 2023

दिव्यांग सेतु

संपादक :- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

"सरकार की विभिन्न योजनाएं दिव्यांगजनों को आत्मनिर्भर बनाकर सम्मान दे रही है।"
- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

"सरकार की योजनाएं दिव्यांगजनों को आत्मनिर्भर बनाने की राह है।"
- प्रधानमंत्री, नरेन्द्र मोदी

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेबल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्फर का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)

- ✓ वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- ✓ राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- ✓ निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- ✓ बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- ✓ बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक IFSC कोड के साथ)

संपादकीय

अगर इनसान के पास हौसला हो तो कुछ भी कर सकता है, दुष्यंत इसका जीता जागता द्रष्टांत है। स्पाइनल मस्क्युलर एट्रोफी जैसी गंभीर बीमारी से पीडित दुष्यंत डॉक्टर के मना करने पर भी अपनी १०वीं बोर्ड की परीक्षा नहीं छोडना चाहता, अगर इनसान में हौसला हो तो वह किसी भी मुसीबत का सामना कर उस पर विजय प्राप्त करता है। परीक्षा के तनाव में आकर कई छात्र खुदकुशी कर लेते हैं ऐसे छात्रों के लिए दुष्यतं एक मिसाल है कि छोटी मोटी परिक्षाओं से घबराना नहीं चाहिए पर उन परीक्षाओं का हंसते हंसते सामना करना चाहिए, सभी छात्र दुष्यंत से जरुर कुछ सीख लेंगे।

सरकार दिव्यांगजनों को केवल व्यवसाय और आत्मनिर्भरता के लिए ही आर्थिक सहाय नहीं देती बल्कि विवाहित जीवन के लिए भी आर्थिक सहाय देकर उनके जीवन को साधारण लोगों की तरह साधारण बनाने की दिशा में सहाय करती है। गुजरात सरकार द्वारा दिव्यांग विवाह सहाय योजना में व्यक्तिगत रुप से ५०,००० रुपए की सहायता राशि देकर सरकार ने दिव्यांगजनों के वैवाहिक जीवन की शुरुआत को आसान बनाने की दिशा में अच्छा कदम उठा रही है, सरकार की ऐसी योजनाओं से दिव्यांगजनों का मनोबल बढ़ता है सरकार द्वारा ऐसी जो भी योजनाएं है वे सब सराहनीय है। संत सुरदास सहाय योजना के माध्यम से सरकार पात्रता वाले दिव्यांगजनों को मासिक १००० रुपए की सहायता राशि देकर उन्हें आत्मनिर्भर बना रही है यह भी सराहनीय है।

बस इन सारी योजनाओं का लाभ अधिक से अधिक दिव्यांग ले सके उसके लिए सरकार उचित प्रचार -प्रसार करे यह अनिवार्य है।

दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

मार्च : 2023, पृष्ठ संख्या : 16

वर्ष-6 अंक : 75

प्रेरणास्त्रोत और संपादक

मंत्रयुगपरिवर्तक ॐकार महामंडलेश्वर १००८
प. पू. संतश्री सद्‌गुरु ॐऋषि स्वामी।

सह-संपादक

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

संपर्क-सूत्र

सेवा समर्पण फाउण्डेशन

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,

अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,

नया विकासगृह रोड, पालडी,

अहमदाबाद - ३८०००९

(मो.) 99749 55365, 9974955125

मुद्रक

प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.

आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6

Phone : 079 26405200

ये हौसला कैसे झुके..ये आरझू

स्पाइन मस्क्युलर एट्रोफी बीमारी से पीडित दुष्यंत का.....

राजकोट का दुष्यंत जन्म से ही एस.एम.ए नामक बीमारी से पीडित है फिर भी हॉस्पिटल से छूट्टी लेकर व्हीलचेयर में बैठकर १०वीं बोर्ड का एक्जाम दे रहा है हिंमते मर्दा तो मददे खुदा इस पंक्ति को राजकोट के दुष्यंत राठोड ने चरितार्थ किया है। दुष्यंत जन्म से ही स्पाइन मस्क्युलर एट्रोफी (एस.एम.ए) नामक बीमारी से पीडित है। इस बीमारी में इनसान चल नहीं सकता और उसके दोनों हाथ-पैर काम नहीं करते। फिलहाल सी.बी.एस.इ बोर्ड के एक्जाम चल रहे हैं। दुष्यंत हॉस्पिटल में भर्ती होने के बाद कक्षा १० वीं बोर्ड सी.बी.एस.इ का एक्जाम देने के लिए छूट्टी लेकर व्हीलचेयर लेकर परीक्षा केन्द्रों पर पहुंचकर परीक्षा दे रहा है। डॉक्टर के मना करने के बाद भी दुष्यंत हिंमत रखकर परीक्षा दे रहा है।

एक ह्पते से दुष्यंत की हालत खराब है-

दुष्यंत पीछले एक साल से कक्षा १० वीं बोर्ड के एक्जाम की तैयारी कर रहा है लेकिन पीछले एक हफ्ते से उसकी हालत खराब होने के कारण हॉस्पिटल में भर्ती होना पड़ा है। डॉक्टरों के मना करने के बाद भी दुष्यंतने परीक्षा के लिए जिद्द कर के छूट्टी ली है। दुष्यंत अपने स्कूल में रेन्कर है।

परीक्षा देकर अच्छा परिणाम लाना है:

दुष्यंत कहता है कि परीक्षा देना मेरा काम है। बीमारी के बाद भी मैं कभी भी रूकूंगा नहीं। परीक्षा के लिए मेरा आत्मविश्वास हमेशा मुझे हिम्मत देता है और आगे बढते रहने की प्रेरणा देता है। मुझे इससे पहले न्यूमोनिया हो गया था और अब एस.एम.ए की बीमारी है। हॉस्पिटल में डॉक्टर ने छूट्टी देने से मना किया था लेकिन मैं अपने आत्मविश्वास के चलते परीक्षा दे रहा हूं। अच्छा परिणाम लाकर मैं अन्य छात्रों को एक संदेश देना चाहता हुं कि शिक्षा ही हमारे लिए सर्वश्रेष्ठ है।

मेरे बेटे में भरपूर आत्मविश्वास हैः

दुष्यंत की माता उर्मिलाबहन राठोड कहती है कि मेरे बेटे का आत्मविश्वास पहले से ही बहुत ज्यादा है। पढ़ाई के मामले में वह ११० प्रतिशत स्योर होता है, वह कहता है कि किसी भी हाल में मैं अपना एक्जाम देकर रहुंगा। दुष्यंत अपने स्कूल के टीचर्स से कहता है कि सर मैंने पूरे साल मेहनत की है और अब अगर परीक्षा नहीं दूंगा तो मुझे जिंदगी भर अफसोस रहेगा कि मैंने परीक्षा क्यों नहीं दी।

किसी भी बात से मायूस नहीं होना चाहिए

उर्मिलाबहन कहती है कि कई छात्र पढ़ाई के मामले में मायूस होकर गलत कदम उठा लेते हैं। मैं उनसे कहना चाहती हुं कि किसी भी बात को लेकर मायूस नहीं होना चाहिए। जो भी मुश्किलें आयें उनका हिम्मत से सामना करना चाहिए। मेरे बेटे की बीमारी को लेकर उसे हर रोज एक घंटे तक फिजियोथेरापी की ट्रीटमेन्ट लेनी पडती है। बाकी के समय वह स्कूल जाता है।

स्पाइन मस्क्युलर एट्रोफी बीमारी क्या है?

बच्चों को होनेवाली यह एक असाध्य बीमारी है। इस बीमारी के कारण बच्चों की मांसपेशियां कमजोर हो जाती है और रीढ़ की मांसपेशियों में हिलचाल की समस्याएं पैदा होती है। स्पाइनल मस्क्युलर एट्रोफी के कारण बच्चों के दिमाग के कोषिकाएं और रीढ़ की नसें कमजोर होने लगती है।

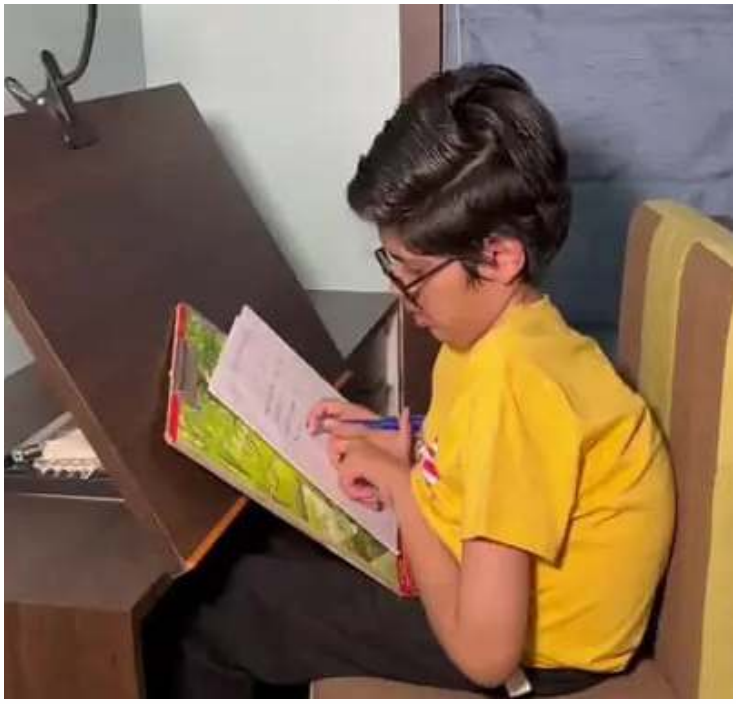

स्पाइनल मस्क्युलर एट्रोफी के लक्षणः

- हाथ पैर में कमजोरी
- बैठने, चलने और अन्य किसी भी तरह की हिलचाल में समस्या
- मांसपेशियों की हिलचाल में समस्या
- जोड़ों और हड्डियों में समस्या, विशेष रुप से रीढ की हड्डियों में समस्या
- सांस लेने में समस्या

सांस लेने के लिए वेन्टिलेटर की आवश्यकताः

जिन बच्चों में रीढ की मांसपेशियों में एट्रोफी के लक्षण होते हैं वे इतने असमर्थ हो जाते हैं कि उन्हें सांस लेने में भी तकलीफ होती है और उन्हें सांस लेने के लिए वेन्टिलेटर की आवश्यकता पड़ती है। चूंकि बच्चों को लंबे समय तक वेन्टिलेटर पर भी नहीं रख सकते क्योंकि ट्यूब में संक्रमण का खतरा रहता है।

स्पाइनल मस्क्युलर एट्रोफी के प्रकारः

पहले प्रकार के स्पाइनल मस्क्युलर एट्रोफी में छ मास के बच्चों में यह बीमारी होती है। यब घातक

बीमारी होती है। दूसरे प्रकार की बीमारी ७ से १८ महिने के बच्चों में देखी जाती है यह पहले प्रकार से कम खतरनाक होती है। तीसरे प्रकार की बीमारी १८ महिने से बडी उम्र के बच्चों में देखी जाती है , इनमें कम लक्षण नजर आते हैं। चौथे प्रकार की बीमारी बडी उम्र के लोगों में नजर आती है इसके लक्षण बहुत सामान्य होते हैं।

दिव्यांग बच्चों ने बनाइ पेइन्टींग और पाए उपहार

दिनांक 4 मार्च 2023 रविवार के दिन मनोदिव्यांग बच्चों की प्रतिभाओं को निखार मिले, उनका उत्साह बढ़े इसलिए प्रेरणालक्षी ड्रोइंग कोम्पिटिशन, पुरस्कार वितरण जैसे कार्यक्रमों का आयोजन लायन श्री विराट सावलिया के जन्मदिन के उपलक्ष्य में अहमदाबाद के लायन्स क्लब ऑफ जोधपुर हील, गायत्री परिवार नारणपुरा, स्मित चाइल्ड एज्युकेशन एन्ड डेवलपमेन्ट ट्रस्ट के द्वारा किया गया था। इन कार्यक्रमो का आयोजन डे.मेयर श्रीमती गीताबेन पटेल, माननीय डॉ.ऋत्वीज पटेल, (प्रवक्ता भाजपा.गुजरात) अतिथि विशेष लायन आशाबेन ब्रह्मभट्ट (अहमदाबाद. म्यु. काउन्सिलर-नवरंगपुरा वॉर्ड) एवं नवा वाडज के काउन्सिलर की उपस्थिति में वेराइ माताजी मंदिर नवावाडज, रेल्वे क्रोसिंग के पास किया गया था। जन्मदिवस संस्कार गायत्री परिवार के प्रवीणभाई जी पटेलने वैदिक मंत्रोच्चार के साथ करवाये थे । जन्मदिन के उपलक्ष्य में वहां उपस्थित सभी मनोदिव्यांग बच्चों को उपहार देकर स्वादिष्ट भोजन भी करवाया गया था।

दिव्यांग विवाह सहाय योजना
दिव्यांग व्यक्तियों को विवाह के लिए राज्य सरकार द्वारा योजना

दिव्यांग व्यक्तियों को उनके विवाह जीवन में सहायक होने के लिए राज्य सरकार की ओर से सहायता राशि दी जाती है ताकि दिव्यांग व्यक्ति किसी अन्य पर अवलंबित न होकर सम्मान के साथ अपना विवाहित जीवन आरंभ कर सकें। इस योजना का लाभ पाने के लिए निम्नलिखित पात्रता आवश्यक है-

- कन्या की उम्र १८ साल से अधिक और युवक की उम्र २१ साल से अधिक होनी चाहिए।
- योजना का लाभ केवल एक ही बार मिलेगा।
- इस योजना में शादी की तारीख से दो वर्ष के भीतर आवेदन करना अनिवार्य है।
- दो अलग अलग जिलो में रहने वाले दिव्यांग लोगों के किस्से में दिव्यांग विवाह सहाय योजना का लाभ पाने के लिए आवेदक दिव्यांग दंपति विवाह के बाद स्थायी रुप से जहां निवास करने वाले हो वहां करना होगा। आवेदन मंजूर करनेवाले जिला समाज सुरक्षा अधिकारी को अन्य जिले के जिला समाज सुरक्षा अधिकारी को आवेदन मंजूर किए जाने की जानकारी देनी होगी।
- दिव्यांग आवेदक अन्य राज्य की दिव्यांग स्त्री के साथ विवाह करे तब दिव्यांग पति-पत्नी को इस योजना का लाभ पाने के लिए आवश्यक दस्तावेज प्रस्तुत करने होगे।
- दिव्यांग आवेदक अन्य राज्य की दिव्यांग स्त्री के साथ विवाह करे तब जिला समाज सुरक्षा अधिकारी को ऐसी महिला ने अपने राज्य में दिव्यांग विवाह सहाय नहीं प्राप्त की है ऐसा एफिडेविट प्राप्त करना होगा।
- इस योजना का लाभ निम्नलिखित पात्रता वाले दिव्यांगों को मिलेगा।

क्रंम	दिव्यांगता	दिव्यांगता का असर
१	द्रष्टिहिनता, कम द्रष्टि, आनुवंशिक कारणों से होनेवाला स्नायु क्षय, रक्तपित से मुक्त हुए लोग, एसिड अटेक से पीडित, हिलचाल के साथ की अशक्तता, सेरबल पाल्सी, वामन कद, बहुविध स्कलेरोसिस-शरीर की मांस पिशियां कठिन होनेवाली विकृति	४० प्रतिशत या अधिक
२	श्रवण हिनता या कम सुनाइ देना	७१ प्रतिशत से १०० प्रतिशत
३	क्रोनिक न्युरोलोजिकल हालत, साधारण इजा, जान लेवा रक्तस्राव, कंपन, स्नायुबद्ध कठिनता, बौद्धिक असमर्थता, हिमोग्लोबिन की कमी, दीर्घकालिन अनेमिया, मानसिक बीमारी, विशेष शिक्षा संबंधी दिव्यांगता, वाणी और भाषा की अशक्तता, चेतातंत्र न्युरो की विकासलक्षी स्थिति में क्षति, मल्टीपल डिसेबिलीटीज,	५० प्रतिशत और उससे अधिक

मिलनेवाली सहाय ?

- इस योजना के अंतर्गत एक दिव्यांग व्यक्ति अन्य दिव्यांग व्यक्ति से विवाह करे तो दोनों को प्रति व्यक्ति ५०,००० रुपए कुल मिलाकर १,०००,०० लाख रुपए की सहाय राशि मिलती है।
- किसी दिव्यांग व्यक्ति के साथ कोइ साधारण व्यक्ति विवाह करे तो दिव्यांग व्यक्ति को ५०,००० रुपए की सहायता राशि मिलती है।

इस योजना का आवेदन पत्र:

- इस योजना के अंतर्गत esamajkalyan.gujarat.gov.in पोर्टल पर ओनलाइन आवेदन स्वीकार किए जाते हैं साथ ही इस योजना का लाभ डिजिटल गुजरात पोर्टल पर से डिजिटल सेवा सेतु अंतर्गत इ ग्राम केन्द्रों पर एक ही दिन दिए जाए ऐसी सुविधा प्राप्त है।
- ओनलाइन आवेदन की जांच कर मंजूर करने की सत्ता संबंधित जिला समाज सुरक्षा अधिकारी को दी गई है।

गुजरात सरकार की पहल

राज्य के ३.५० लाख दिव्यांग बच्चों के लिए ३ हजार स्पेशियल एज्युकेटेड टीचर की भरती होगी.

पाठशाला में ही बनेगी स्पेशियल पाठशाला

सामान्य बच्चों का ही अभ्यासक्रम पढ़ेंगे दिव्यांग बच्चे

सुप्रीम कोर्ट ने देश के सभी राज्यों को आदेश जारी किया है कि वह अपने राज्य में दिव्यांग बच्चों को भी साधारण बच्चों की तरह शिक्षा देने के लिए सुविधा मुहैया करे। सुप्रीम कोर्ट के आदेश के चलते गुजरात सरकार ने मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में एक मीटींग बुलाई थी जिसमें यह निर्णय लिया गया है कि राज्य के 3.50 लाख दिव्यांग बच्चों के लिए अलग से शिक्षा व्यवस्था मुहैया की जायेगी। इस निर्णय के चलते राज्य के शिक्षा विभाग ने 3 हजार स्पेशियल एज्युकेटेड टीचर की भरती करने का निर्णय लिया है। ये स्पेशियल एज्युकेटेड टीचर साधारण स्कूलो में साधारण बच्चों की तरह ही दिव्यांग बच्चों को शिक्षा प्रदान करेंगे। साधारण बच्चें जिस स्कूल्स में शिक्षा ले रहे हैं उन्हीं स्कूलो में दिव्यांग बच्चों की शिक्षा के लिए व्यवस्था की जायेगी।

21 तरह की शारीरिक और मानसिक जैसी विभिन्न

बीमारीयों से पीडित दिव्यांग बच्चों के लिए यह व्यवस्था एक आशीर्वाद साबित होगी। इन दिव्यांग बच्चों के लिए साधारण बच्चों के स्कूल में शिक्षा की व्यवस्था है लेकिन दिव्यांग बच्चों की भाषा में उनकी समझ के अनुसार शिक्षा दे सकें ऐसे शिक्षकों की कमी है। विभिन्न ट्रस्टों की 114 से अधिक ग्रान्टेड स्कूल में दिव्यांग बच्चों के लिए शिक्षा की व्यवस्था है लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने इन दिव्यांग बच्चों को सरलता से

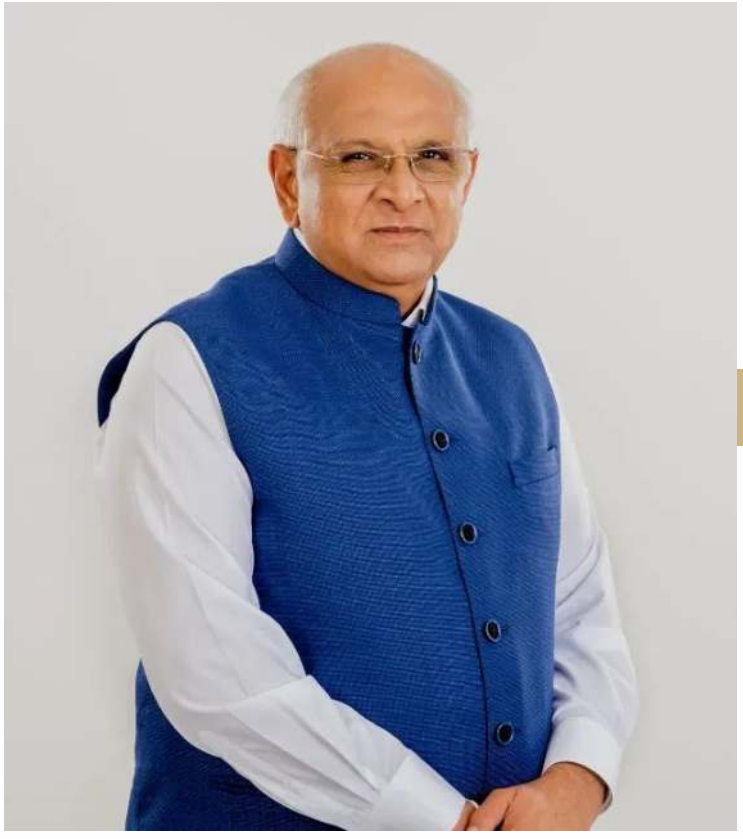

साधारण बच्चों जैसी शिक्षा मिले ऐसी सुविधा मुहैया करवाने का आदेश दिया है। इस आदेश के चलते ही राज्य के मुख्यमंत्री श्री भुपेन्द्रभाई पटेल ने दोनों शिक्षा मंत्रीयों की उपस्थिति में शिक्षा विभाग के आला दर्जे के अधिकारीयों के साथ मीटिंग कर आदेश के अनुसार दिव्यांग बच्चों के लिए शिक्षा व्यवस्था का आयोजन करने का आदेश दिया है।

इस मीटिंग में सुप्रीम कोर्ट के मार्गदर्शन के अनुसार दिव्यांग बच्चों के लिए क्या व्यवस्था की जा सकती है उसकी रुपरेखा तैयार की है। इस रुपरेखा के तहत ही 3 हजार से अधिक स्पेशियल एज्युकेटेड टीचर की भरती करने का आदेश जारी किया गया है। इस भरती के लिए टीचर्स एलिजिबीलीट टेस्ट का आयोजन अपैल-मई में किया जायेगा। ये शिक्षक दिव्यांग बच्चों को उनकी भाषा में उनकी समझ के अनुसार शिक्षा देंगे।

दिव्यांग बच्चों के लिए कैसे अलग व्यवस्था की जाएगी ?

राज्य की हर प्राथमिक माध्यमिक स्कूल में निश्चित स्कूलो का एक क्लस्टर बना हुआ है। इस क्लस्टर के ही किसी एक स्कूल में दिव्यांग बच्चों के लिए अलग से शिक्षा की व्यवस्था की जाएगी। दिव्यांग बच्चों के लिए अलग से क्लासरुम और शिक्षक की व्यवस्था होगी। इन बच्चों के लिए आवश्यक संसाधन भी उपलब्ध करवाए जाएंगे।

अभ्यासक्रम साधारण बच्चों जैसा ही होगा लेकिन प्रश्नपत्र अलग होगा

इस योजना में दिव्यांग बच्चों को भी साधारण बच्चों की तरह शिक्षा दी जाएगी। इसलिए उनका अभ्यासक्रम साधारण बच्चों की शिक्षा जैसा ही होगा लेकिन उनकी परीक्षा पद्धति अलग होगी। सरकार के सूत्रों ने बताया है कि दिव्यांग बच्चों के प्रश्नपत्र और उनकी मूल्यांकन पद्धति भी साधारण बच्चों से भिन्न होगी।

संत सुरदास योजना

लाभ के लिए पात्रता**?**

80 प्रतिशत या उससे अधिक दिव्यांगता वाला व्यक्ति।

0 से **17** वर्ष के बीच का विकलांग व्यक्ति लाभ पाने का पात्र है।

इस योजना का लाभ गरीबी रेखा के नीचे जीने वाले गुजरात के दिव्यांग व्यक्तियों को मिलेगा। **(**ग्रामीण क्षेत्रों के लए भारत सरकार આ યોજનાનો के मिनिस्ट्री ओफ रुरल डेवलपमेन्ट और शहरी क्षेत्रों के लिए भारत सरकार के मिनिस्ट्री ओफ अर्बन हाउसींग एण्ड पोवर्टी एलीवेशन की ओर से बी**.**पी**.**एल **(**गरीबी रेखा से नीचे जीनेवाले लोगों की सूची**)** बनाई गई है जिस में **0** से **20** के स्कोर में समाविष्ट दिव्यांग व्यक्ति इस योजना का लाभ लेने के लिए पात्र है।

क्या लाभ मिलेगा **?**

इस योजना के तहत**, 1000/-** सहायता राशि लाभार्थी को मासिक रु। मिलेगी।

आवेदक को सहाय राशि माध्यम से भुगतान की डाक/बैंक खाते में डीबीटी जाएगी।

इस योजना का आवेदन पत्र **:**

- इस योजना के अंतर्गत **esamajkalyan.gujarat.gov.in** पोर्टल पर ओनलाइन आवेदन स्वीकार किए जाते हैं साथ ही इस योजना का लाभ डीजिटल गुजरात पोर्टल पर से डीजिटल सेवा सेतु अंतर्गत इ ग्राम केन्द्रों पर एक ही दिन में उपलब्ध कराया गया है।
- ओनलाइन आवेदन की जांच कर मंजूर करने की सत्ता संबंधित जिला समाज सुरक्षा अधिकारी को दी गई है

मानसिक दिव्यांग बच्चोंने लिया एकदिवसीय पिकनिक का आनंद

अहमदाबाद के अखबारनगर नवा वाडज स्थित स्मित चाइल्ड एज्युकेशन ट्रस्ट के मानसिक दिव्यांग बच्चों को मुगलधाम भायला, सुरपुरा धाम भोलाड, बुटभवानी मा अरणेज और गणेशपुरा गणपतिमंदिर में दर्शन करवाने ले जाया गया था। एकदिवसीय पिकनिक में मौज करते हुए सभी बच्चों ने धार्मिक स्थानों के दर्शन किए और आशीर्वाद लिए। सभी बच्चों ने एकदिवसीय पिकनिक का मजा लेते हुए अपना पूरा दिन हंसी खुशी के साथ बीताया।

धोलका को मिला राज्य स्तर पर गौरव

धोलका के सेवाभावी युवा शिक्षक श्री भाविकभाई परमार का श्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार से सम्मान

धोलका के सोवाभावी युवा शिक्षक श्री भाविन परमार को मानसिक विशिष्ट व्यक्तियों के क्षेत्र में शिक्षा के कार्य को ध्यान में रखते हुए राज्य स्तरीय श्रेष्ठ शिक्षक के पुरस्कार से सम्मान किया गया है। यह सम्मान केवल भाविन परमार का ही नहीं है किंतु उनके जैसे हजारो युवाओं का है जो इस क्षेत्र में अपनी सेवा प्रदान कर रहे हैं। मानसिक विशिष्ट व्यक्तियों के क्षेत्र में उनकी शिक्षा को लेकर जो कार्य किए जाते हैं उनका सम्मान करने हेतु सोसायटी फोर धी वेलफेर ऑफ मेन्टली रीटायर्डेड संस्था के द्वारा प्रति वर्ष सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ साथ इस क्षेत्र में कार्य कर रहे लोगों का उनकी इस विशिष्ट सेवा के लिए पुरस्कार से सम्मान किया जाता है। इसी उपलक्ष्य में दिनांक २५ फरवरी २०२३ शनिवार को टागेर होल में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री नरेन्द्रभाई मेहता, अतिथि विशेष श्री समीरभाई जे शाह, SWMR प्रमुख श्री राजेन्द्रभाई शाह, नंदकिशोरभाई परीख एवं निलेशभाई पंचाल के कर कमलों से इन पुरस्कारों के द्वारा सेवाभावी लोगों का सम्मान किया गया। श्री भाविन परमार पिछले बारह सालों से फ्रिडम डे केर सेन्टर के माध्यम से धोलका नगर के दिव्यांग बच्चों को शिक्षा और समाज की मुख्य धारा में लाने के लिए कार्य कर रहे हैं। श्री भाविन परमार के इन सराहनीय कार्यों का सम्मान करते हुए इस वर्ष इस पुरस्कार से उनका सम्मान किया गया है।

सम्मान समारोह के इस कार्यक्रम में फ्रिडम डे केर सेन्टर के बच्चों ने ब ग्रुप में लेजी लिरिक्स पर डान्स और क ग्रुप में शिक्षकों ने थीम डान्स की प्रस्तुति कर द्वीतिय स्थान प्राप्त किया था।

युक्रेन युद्ध में हाथ-पैर गंवानेवालों के लिए प्रोस्थेसिस तकनीक का वरदान

इस तस्वीर में युक्रेन सेना के 24 वर्षीय सैनिक विटाली इवास्चुक हाईटेक बायोनिक प्रोस्थेसिस की प्रस्तुति कर रहे है । ओपन बोयोनिक्स कंपनी के द्वारा युक्रेन के सुपरह्युमन्स सेन्टर में इस तकनीक से विकसित कृत्रिम अंगो को प्रदर्शित किया गया था । रशिया के द्वारा युक्रेन पर किये गये हमले में हजारों सैनिक एवं हजारों सामान्य नागरिकोंने अपने हाथ-पैर गंवाए है, जिसमें महिलाएं और बच्चें भी शामिल हैं। हाथ पैर गंवाने वाले इन लोगों के लिए यह बायोनिक प्रोस्थेसिस तकनीक वरदान साबित हो सकती है।

वर्ल्ड हियरींग डे के दिन मुकबधिर बच्चों ने अटल ब्रीज पर बनाइ मानव श्रृंखला...

तीन मार्च वर्ल्ड हियरींग डे के उपलक्ष्य में अहमदाबाद अटल ब्रीज पर जन्मजात मुकबधिर बच्चों ने जो कोक्लियर इम्प्लान्ट के द्वारा सुन और बोल सकते हैं उन्होंने मानव श्रृंखला बनाकर (Bridging the Sound Gap) श्रवण शक्ति संबंधित समस्याओं के निराकरण का संदेश दिया था। इस कार्यक्रम में शहर पुलिस कमिश्नर और इ. एन. टी और पीडियाट्रिक विभाग के डॉक्टर भी उपस्थित थे। सिनियर कोक्लियर इम्प्लान्ट सर्जन डॉ.राजेश विश्वकर्मा ने संदेश देते हुए कहा था कि-बडी जोर शोर से संगीत सुनना टालना चाहिए, अगर आप किसी शोर शराबे वाली जगह पर हो तब आपको इयरप्लग का उपयोग करना चाहिए और नियमित रुप से अपने कानों की जांच करवानी चाहिए।

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर